बीज की दूरी 10 सेमी0 होती है। प्रत्येक ड्रम में 2 किग्रा0 बीज डाला जा सकता है। कृषि विभाग के माध्यम से यह यंत्र छूट पर 4250/- रूपये में एग्रो से मिल जाता है। इस यंत्र द्वारा एक एकड़ की बुवाई में 1.30 घंटा लगता है।

खेत की तैयारी :- खेत को दो बार हैरो चलाकर खुला छोड़ दें उसके बाद कल्टीवेटर से 2 बार जुताई कर पानी भर कर लेव लगावें। यदि खेत समतल न हो तो लेजर लैण्ड लेवलर द्वारा खेत को पहले समतल कर लें।

बीज की तैयारी :- बुवाई के पहले बीज का जमाव देख लें 85% जमाव वाला बीज ही बुवाई के लिए प्रयोग करें। संभव हो तो प्रभावित बीज प्रयोग करें। यदि घर का बीज प्रयोग कर रहें हैं तो स्पष्ट बीजों के चुनाव के लिए पहले 10% नमक का घोल तैयार कर लें। घोल की सहायता के लिए इसमें कच्चा अंडा डालकर देख लें। जब अंडा तैरने लगे तो नमक की मात्रा पर्याप्त है। इस घोल में धान के बीज को डाल दें जो बीज तैरता हो उसे अलग कर दें तथा नीचे बैठे बीज को 4-5 बार साफ पानी से धुलकर बीज को 24 घंटे पानी में भिगोकर रखें उसमें ही स्ट्रारटोसाइक्विन डाल दें। पानी से निकलने के बाद बीज को कोर्बन्डाजिम 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से शोधित करें। उसके पश्चात 24 घंटे भीगी बोरियों से ढक कर रख दें। जिसमें 3 सेंम अंकुरण हो जाए। ड्रम सीडर से बुवाई के लिए अंखुओं की लम्बाई 5 मिमी० से ज्यादा नहीं होनी चाहिए अन्ययथा बीज गिरने में दिक्कत होती है।

बुवाई के समय खेत की स्थिति :- ड्रम सीडर से बुवाई के लिए खेत में पानी नहीं होना चाहिए ध्यान रखें कि लेव लगाने के पश्चात जैसे ही जमीन की सतह पर पानी न रहे पर कहीं-कहीं छिछला पानी या कींचड़ रहे उस समय ही बुवाई करनी चाहिए।

बीज की मात्रा :- प्रति एकड़ 12 किग्रा० पर्याप्त होता है।

बुवाई का समय :- सामान्य भूमियों पर 10-20 जून व जल भराव वाले क्षेत्रों में मई के आखिरी सप्ताह में बुवाई करनी चाहिए।

प्रजातियों का चुनाव :-

शीघ्र पकने वाली	प्रजाति	उत्पादन क्षमता (कु०/हे०)
90-125 दिन	नरेन्द्र-97 शुएक सम्राट नरेन्द्र-118	35-45 मध्य अवधि
110-125 दिन	नरेन्द्र धान 2026 नरेन्द्र लालमती नरेन्द्र मयंक	40-50
125-135 दिन	सरजू-52, नरेन्द्र-359 पन्तधान-4	55-60
140-155 दिन	सांभा महसूरी, स्वर्ण महसूरी	50-60
सुगन्धित धान	पूसामती-1, पूसा-1121 बासमती-370, वल्लभ बासमती 22/35-60 काला नमक-3, पूसा-1509	35-45
शंकर धान	पी.आर.एच.-10 प्रोएग्रो 6444, पी.एच.बी.-71	60-70
जल भराव वाले क्षेत्र	स्वर्ण सब-1, जल लहरी, जल प्रिया, जल निधि	35-40

उर्वरक प्रबन्धन :- प्रति हेक्टेयर तत्व रूप में 150 किग्रा0 नत्रजन, 60 किग्रा0 फास्फोरस तथा 60 किग्रा0 पोटाश देना चाहिए। इसके लिए किसान भइयों को प्रति एकड़ 52 किग्रा0 डी0ए0पी0 तथा 27 किग्रा0 म्यूरेट आफ पोटास बुवाई के समय देना चाहिए। यूरिया प्रति एकड़ 110 किग्रा0 जिसको 4 भागों में बांटकर 30 किग्रा0 यूरिया बुवाई के 10 दिन बाद 50 किग्रा0 यूरिया बुवाई 25 दिन बाद तथा 20 किलो यूरिया 45 दिन पर देना चाहिए। शेष 10 किग्रा0 यूरिया प्रति एकड़ बाली फूटते समय देना लाभकारी होगा। आवश्यकतानुसार प्रति एकड़ 10 किग्रा0 जिंक सल्फेट भी अच्छी फसल के लिए आवश्यक है। इसको बेसल ड्रेसिंग में देना चाहिए।

खर पतवार नियंत्रण :-

- धान में खरपतवार नियन्त्रण के लिए निराई सबसे अच्छा साधन है। रसायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण के लिए ड्रम सीडर से बोवाई के 25 दिन बाद पायराजो सल्फ्यूरान (साथी) 80 ग्राम + बिसापायरी बैक, सोडियम (एडोरा) 10 एस.सी. की 100 मिली0 मात्रा को 150 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रतिएकड़ छिड़काव करें।
- मोथा व झिरूवा के नियंत्रण के लिए इथोक्सीस सल्फुरॉन 15 डब्लू डी.जी. को 53 ग्राम मात्रा 120 लीटर पानी में घोलकर बुवाई 25 दिन बाद प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- संवई, डंवरा लेप्टोक्लोआ, चाइनेनसिस चिड़ियों का दाना तथा भकड़ा के नियंत्रण हेतु (फिनोक्साप्रोप + सेफनर) 6.7 ई.सी. (राईस स्टार) को 447 मिली0 मात्रा को 150 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 25 दिन बाद छिड़काव करें।

सिचाई :- आवश्यकतानुसार खेत से पानी समाप्त होने के 2-3 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। ड्रम सीडर द्वारा बुवाई करने पर खेत में पहले सप्ताह नमी बने रहना आवश्यक है। बाली में दाना भरते समय भी खेत में नमी बना रहना चाहिए।

शेग :- धान में खैरा रोग की रोक थाम के लिए 5 ग्राम जिंक सल्फेट तथा 20 ग्राम यूरिया प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

जीवाणु झुलसा रोग:- जीवाणु झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए 5 लक्षण दिखायी देते ही सिंचाई व नत्रजन का प्रयोग